CANARA VIKAAS PU COLLEGE, MANGALURU

FINAL EXAMINATION – MARCH 2025

Subject: HINDI

II PUC HINDI (Code: 03)

Time: 3 hrs **Marks: 80**

सूचना: १. सभी प्रश्नों के उत्तर हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि में लिखना आवश्यक है।

२. प्रश्नों की क्रमसंख्या लिखना अनिवार्य है।

३. प्रश्न पत्र 'क', 'ख', 'ग', 'घ', इन चार खण्डों में विभाजित है।

४. 'खण्ड–'क', के प्रश्न संख्या 1 से 16 तक के प्रश्नों का उत्तर, जो पहली बार लिखा गया हो, उन्हीं उत्तरों का मूल्यांकन किया जाएगा।

खण्ड – 'क'

I. अ. गध्य भाग के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्पों को चुनकर लिखिए: 10*1=10

1. आठ महीने
2. पडोस–कल्चर
3. कावेरी नदी
4. किला
5. मा के मातृत्व को
6. राजस्थान
7. उपेन्द्रनाथ अश्क
8. दस वर्ष
9) राजेन्द्र यादव
10. सुजान भगत

आ. कोष्टक में दिये गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **5x1=5**

11. मेहनत
12. नारा
13. फ़ुलकारियाँ
14. कावेरी
15. सेवा

इ. निम्नलिखित मुहावरों को उनके अर्थ के साथ जोड़कर लिखिए। **5x1=5**

16. i) निगरानी करना
ii) उपेक्षा करना
iii) अपमानित करना
iv) बहुत प्रसन्न होना
v) भाग्य पलटना

खण्ड –'ख'

II. अ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 2*3=6

17. समाज में महँगाई, रिश्वतखोरी और पाशविकता बढती जा रही है। धर्म का भी व्यापारीकरण हो रहा है। दिन भर दिन कोने में भ्रष्टाचार बढती जा रही है। सरकार के एक दफ़्तर में रिश्वतखोरी को देख सकते हैं। ऊपर लिखित समस्याएँ समाज में बढ रही है।

18. श्री विश्वेश्वरय्या एक कर्मयोगी थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त विश्रम नहीं लिया। उनकी दीर्घायु का कारण पूछने पर कहते थे कि– समय पर काम और व्यायाम करना। अपने समय का सदुपयोग करते थे। वे सदा महनत करते थे, दूसरों से भी यही आशा रखते थे। उसका कहना है कि जिस दिन हम अपना आलस त्याग देंगे, उसी दिन हमारे देश का भी विकास होगा। सेवाभाव को अत्यंत पवित्र आचरण मानते थे। आदर्श, विनयशील और साधु प्रवृत्ति के पुरुष थे। जिम्मेदारी तो उनके चरित्र की अटूट अंग ही थी।

19. चीफ़ की दावत के लिए घर सजाने लगे लेकिन उनके सामने बहुत बडी समस्या उत्पन्न हुई। शामनाथ की माँ को क्या करेंगे? माँ वृद्ध हो गयी थी और वह बैठी बैठी जगह पर कर्राटे मारकर सो जाती थी। यह विचार से दोनों चिंतित थे। श्रीमान कहने लगी कि इन्हें इनकी सहेली के घर भेज दो। शामनाथ को यह पसन्द नहीं था। जल्दी खाना खाकर अपनी कोठरी में चला जाय।

20. शिन्कन्सेन का शाब्दिक अर्थ है– न्यू ट्रंक लाइन। इसे बुलेट ट्रैन भी कहते हैं। इसमें १६ डिब्बे होते हैं। हर गाडी में १३०० यात्रियों के बैठने का प्रबंध है। १३०० फ़ीट लंबी इस रेल में ५० मोटर जेनेरेटर लगे होते हैं। जिस वक्त यह १७० किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ़्तार से चलती है। कहीं भी रुकने के लिए इसे ५ किलोमीटर की गुंजाइश चाहिए। इसकी गति इतनी तीव्र है। तोकियों और ओसाका के बीच ६६ गुफ़ाएँ आती है। जापान के निवासी इससे यात्रा करना एक मौलिक अनुभव मानते हैं।

आ. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का संदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए। 2*3=6

21. उ) **<u>संदर्भ:</u>** प्रस्तुत वाक्य उपन्यास साम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित "सुजान भगत" नामक पाठ से लिया गया है। सुजान भगत अपने आप से कहता है।

<u>व्याख्या:</u> घर में पराधीन हुए। सुजान भगत के सामने एक नई समस्या खडी हो गयी थी। वह सोचने लगता है कि लडके उसका सेवा सम्मान करते हैं, उसके सामने चिलम नहीं पीने, साट पर नहीं बैठते हैं क्या यह सब भ्रम या गृह स्वामी होने का प्रमाण था? आज उन्हें पता चला कि यह सब केवल श्रद्धा थी। अब तक जिस घर में राज्य किया, उसी घर में पराधीन बनकर वह नहीं रह सकता।

22. **<u>संदर्भ</u>**: प्रस्तुत वाक्य ममता कालिया के यात्रा वृत्तांत यात्रा जापान की यात्रा पाठ से लिया गया।

व्याख्या: । लेखिका अपने बचपन के बारे में इस प्रकार कहती है कि–मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल थी पाँच भाई – बहनों में सबसे छोटी थी। मन्नु भंडारी अपने व्यक्तित्व मे अनजाने अनचाहे किए पिताजी के व्यवहार ने उनके मन मे हीनभावनाओं की पैदा करने के बारे मे कहते हुए उपर्युक्त वाक्य को कहती है।

23. **<u>संदर्भ:</u>**इस वाक्य लेखक हरिशंकर परसाई से लिखित "भोलाराम का जीव" पाठ से लिया गया है। वर्तमान समाज की समस्याओं पर व्यंग्य से किया गया।

<u>व्याख्या</u>: चित्रगुप रजिस्टर पर रजिस्टर देख रहे थे। गलती उन्हें पकड में नहीं आ रही थी। उन्होंने रजिस्टर बन्द करते हुए धर्मराज से कहा कि–रिकार्ड सब ठी है, भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा, ऐसा तो कभी नहीं हुआ था। तब यमलोक नारद आते है और वे चिंता का कारण पूछते है। उस समय चित्रगुप्त उपर्युक्त वाक्य को कहते है।

24. उ) **<u>संदर्भ:</u>** प्रस्तुत वाक्य लेखक डा श्याम सुंदर द्वारा रचित कर्तव्य और सत्यता नामक गद्य से लिया गया है। लेखक ने हमें अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान बनने की प्रेरणा दी है।

<u>व्याख्या</u>: हम लोगों का यह परम धर्म है कि– सत्य बोलनेवालों को सबसे श्रेष्ट मानों और कभी झूठ न बोलें, चाहे उससे कितनी ही अधिक हानि क्यों न होती हो। सत्य बोलने से ही समाज में हमारा समान हो सकेगा और हम आनन्दपूर्वक अपना जीवन बिता सकेंगे।

III. अ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं एक प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 1*3=3

25. उ) गोपिकाएँ अपने आप को क्यों भाग्यशालिनी समझती हैं क्योंकि वे उद्धव से कहते हैं कि, है उद्धव! आज हम बडभागी हो गई हैं, धन्य धन्य हो गई है, अपनी जिन आँखों से तुमने प्रिय कृष्ण को देखा है वे आँखें अब हमें लग गई है (हम तुम्हारी आँखों में श्याम की आँखें श्याम की मूरत देख रही है) जैसे अनुरागी भौरे की प्रिय सुमन की गंध पवन ले आती है, वैसे ही तुम्हें हमें आनंद हो रहा है। तुम भी अंग अंग में कृष्ण का सुख राग (प्रेम, रंग) भर कर ले आये हो। जसे दर्प में अपना रूप देखने से दृष्टी अधिक रुचिकर लगने लगती है, इसी प्रकार तुम्हारे नेत्र रूपी दर्पण में कृष्ण के नेत्रों के दर्शन क हों बहुत अच्छा ला रा है – जिन नेत्रों से तुमने श्याम को देखा है उन्हीं नेत्रों में हम झांक कर देख रहे हैं। सूरदास कहते हैं कि इस प्रकार आज हमें साक्षात श्या ही मिल गे है और हमारे तन से विरह व्यथा को छोड दिया है, श्याम मिलन की साक्षानुभुति हमे हो रही है।

26. उ) जहाँ अहंकार होता है, वहाँ श्रिहरि नहीं होते। इसी भाव को व्यक्त करते हुए रहीम जी कहते हैं कि प्रेम की गली संकीर्ण होती है, अत: इसमें अहंकार तथा श्रिहरी दोनों एक साथ नहीं रह सकते। यदि अहंकार है तो श्रीहरि नहीं है, यदि श्रीहरि तो अहंकार नहीं है।

आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं एक प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 1*3=3

27. उ) 'कायर मत बन' कविता के द्वारा कवि हमें यह संदेश दिया हैं कि, मानव को कभी भी कायर नहीं बनना है। राह में आनेवाली बाधाओं को डटकर मुकाबला करने की सलाह देते हैं। पत्थर ठकराने पर माथे ठोकने के बजाय पत्थर को ही हटाने का प्रयत्न करना चाहिए। समझौते के जरिये जीये गये जीवन व्यर्थ है। गम के आँसू पीने से कोई प्रयोजन नहीं हैं। मानव के पास बुद्दि–ज्ञान, विवेक–बल सब कुछ प्राप्त है। फ़िर अपने को हीन–दीन, दुर्बल क्यों माने? कठिन मेहनत करते हुए आँसू के बजाय, पसीना–खून बहाकर पथ प्रशस्त करना है। मार्ग को उचित ढंग से ढूँढकर, बेकार में कुछ न करके अपने काम में प्रवृत्त होना हैं।

28. उ) कवि का कहना है कि– हमें वृक्ष की रक्षा करनी चाहिए। पर्यावरण की रक्षा तभी संभव है, जब हम वृक्ष की रक्षा पूरी तरह कर पाएँगे। वे अपना वृक्ष को अपना मित्र समझते हैं। कवि कहते हैं कि– हमें एक आशंका थी कि– इन वृक्षों का हम मनुष्य दुश्मन बने जा रहे हैं। इसलिए इन्हें बचाचर ही हम अपने घर शहर और देश का बचाव कर सकते हैं। यदि जंगल न हो तो नदियाँ नालों की तरह दूषित हो जाएगी और धरती मरूस्थल की तरह हो जाएगी।

ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए।

29. कवि के अनुसार संसार में बढती जानेवाली पीडा को कम करना है। यह पीडा उत्तरोत्तर पर्वत सा रूप ग्रहण कर लिया है। ऐसे पर्वत को पिघलाकर सुख–शांति का प्रवाह करने की मंशा रखते हैं। ऐसी धारा में डूबकर मानवता के रंजोगम भूलने की अभिलाषा रखते हैं। कवि के अनुसार देश में फ़ैले भिन्नाधि भिन्न दीवारें टूटनी चाहिए। दीवारें टूटकर गिरनी चाहिए। सभी भेद भाव मिट जाने चाहिए। ऐसे समुन्नत समाज की परिकल्पना करते हुए कवि शोषण व सत्तारूढी अत्याचार की नींव को हिल देना चाहते हैं। कवि चाहते हैं कि हर जगह गाँव, कसबा, शहर, गली–चौबारे हर कहीं निर्जीव सा, बुत सा जीते वाले लोगों को पुन: जोशीले व फ़ुर्तीले बने। लोगों में अमंग हो ऐसी चाह रखते हैं। कवि की कामाना यही नहीं कि बडी बडी बाते कहकर हंगामा खडा करें या कोई दिखावा सजाकर रखे। कवि सच्चे अर्थ में क्रांति चाहते हैं जो समाज को पूरी तरह से परिवर्तित कर देगी। देश की सूरत को

ही मूरत को ही बदल देगी। हर किसी के हृदय में यह आग जलनी चाहिए। नये परिवर्तन की ललक, नये कल की चाह और नई सूरत देखने की कामना हर कोई रखे। ऐसी जागृति पूरे देश को हिलाकर रख देगी।

इ. ससंदभ र्भाव स्पष्ट कीजिए। 2*3=6

30. उ) संदर्भ: प्रतुत दोहे निर्गुण मत के सन्त कवि रैदास द्वारा रचित 'रैदासबानी' से लिया गया है। संत ने भगवान के प्रति अपना दास्यभाव प्रकट किया है।

स्पष्टीकरण: भगवान राम मोती हैं तो रैदास अपने को धागा मान लेते हैं जिसमें पिरोकर मोतियाँ माला बन जाते हैं। ऐसे हो जाने पर 'सोने पर सुहागा' की उक्ति सार्थक होने की बात भी कहते हैं। कवि रैदास अपने को छोटा, क्षुब्ध, हीन–दीन मानकर भगवान राम के सामने एक तुच्छ सेवक का रूप लेना चाहते हैं। यही दास्य भक्ति रैदास के लिए स्वीकार्य है। इसी मार्ग पर वे आगे बढना चाहते हैं।

विशेषता: १) दास्य भाव का स्पष्ट है।

१) करुणा रस का चित्रण मिलता है।

२) निर्गुण भक्ति का प्रकट हुआ हैं।

३) उपमालंकार का प्रयोग हुआ है।

अथवा

उ) संदर्भ: प्रस्तुत दोहा बिहारीलाल द्वारा रचित बिहारी के दोहे से लिया गया है। इनके पदों में नीति–भक्ति का भाव दृष्टिपात होता है।

स्पष्टीकरण: बिहारी कहते हैं कि– केवल गले में जपमाल, माथे पर तिलक, चंदन का लेप लगाकर ढोंगी बनकर फ़िरता रहता है। जपमाला, तिलक आदि पहनने से वह सच्चा भक्त नहीं बन सकता है। मन तो शीशे की तरह होता है। दिखावट का भक्ति आदि व्यर्थ है। शाम की भक्ति में जो लीन ही जाए, वह सच्चे मन से राम का स्मरण करे वही सच्चा भक्त कहलाता है।

विशेषता:१) ब्रज और संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ है।

२)मन की शुद्धता के बारे में दर्शाया गया है।

31. संदर्भ: उपर्युक्त पद्यांश कवयित्री महादेवी वर्मा से लिखित अधिकार कविता से लिया गया है।

व्याख्या: कवयित्री कहती है कि संसार की नियती है कि जो कुछ जन्मा उनका मरना भी निश्चित है कि जो कुछ जन्मा उसका मरना भी निश्चित है। जो कुछ आरंभ हुआ, उसका अंत होना भी स्वाभाविक है। प्रप्रथम कवयित्री फ़ूल को बिम्बात्मक ढंग से संबोधित करती हुई लिखिती हैं कि वह फ़ूल ही क्या, जो खिलकर मुस्कुराकर फ़िर मुरझाता नहीं? फ़ूल का खिलना व कुम्हालाना इस संसार की नियति है। दूसरा बिम्ब तारे को लेकर कहती हैं, तारे रातभर् टिमटिमाकर अपना प्रकाश फ़ैलाते हैं। परंतु ऊषा के समय उन्हें तो बुझ जाना है। यही प्राकृतिक नियम है। पर नाहि फ़ूल, नाहि तारे इसके लिए अपने आँसू बहाते हैं।

विशेषता: १) खडिबोली हिन्दी का प्रयोग हुआ है।

१) प्रकृति से अनेक बिम्बों का प्रयोग किया है।

२) करुणा रस का प्रयोग हुआ है।

३) जीवन में संघर्ष पथ पर निरंतर आगे बढने का संदेश मिलता है।

अथवा

उ) **<u>संदर्भ</u>**: प्रस्तुत कवितांश आधुनिक हिन्दी साहित्य के कवि डा पुण्यमचंद मानव जी द्वारा रचित भार की धरती नामक कविता से लियागया है। यहाँ पर भारत की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

<u>स्पष्टीकरण</u>: प्रस्तुत कविता में कवि भारत की प्रशंसा किया गया है। कवि का कहना है कि यह धरती प्राचीन काल से ही बीरों और संतों की जन्म भूमि है। विष्णु के अवतार राम और कृष्ण के जन्म स्थान रहा है। शांति को वोस्फ़रित किया है। साथ साथ कबीर मलिक मुहम्मद, तुलसी, सूरदास ने अपना सगुण और निर्गुण भक्ति भावना से गुणगान किया है। काशी, प्रयाग, हरिद्वार, बद्रिनाथ केदारनाथ आदि यात्रा स्थल देश में स्थित है। ब्रज, मथुरा, आदि प्रदेश में कृष्ण ने लीला की है। इतना ही नहीं यही भूमि पर रावण और कंस जैसे राक्षसों का संहार भी हुआ है।

<u>विशेषता:</u> १) खडिबोली भाषा का प्रयोग हुआ है।

१) भाषा सरल और बोधगम्य है।
२) धर्म, कर्म, संस्कृति सभ्यता का जन्म भारत की धरती में हुआ है।
३) वीर और साधु संतों के जन्म भारत की धरती में हुआ।

खण्ड –'ग'

IV. अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 1*5=5

32. दादा मूलराज अपने समस्त कुटुम्ब को एक यूनिट बनाये, उस पर पूर्ण रूप से अपना प्रभुत्व जमाये, उस महान वट की भाँति अटल खडे हैं, जिसकी लम्बी–लम्बी डालियाँ उनके आँगन में एक बडे छाते की भाँति धरती को आच्छादित किये हुए, अगणित घोसलों को अपने पत्तों में छिपाये, वर्षों सेतूफ़ानों और आँधियों का सामना किये जा रही हैं।वर्षों इस वट की संगति में रहने के कारण दादा वट ही की भाँति महान दिखाई देते हैं।

आयु की ७२ सर्दियाँ देख लेने पर भी दादाजी का शरीर अभी तक नहीं झुका और उनकी सफ़ेद दाढी वट की लम्बी–लम्बी दाढियों की भाँति उनकी नाभि को छूती हुई मानों धरती को छूने का प्रण किये हुए है। दादाजी मूलराज को तीन बेटे थे। एक महायुद्द में सरकार की ओर से लडते–लडते स्वर्गवास हुआ था। इसके बदले में सरकार ने दादा को एक मुरब्बा जमीन दी थी। उनकी कृपा से दादाजी संतुष्ट नहीं रहे। अपने साहस, परिश्रम, निष्ठा, दूरदर्शिता और रसूख से उन्होंन एक के दस मुरब्बे बनाये। उनके दो बेटे और पोते, जमीन,फ़ार्म, डेयरी और चीनी के उस कारखाने के काम की देखभाल करते हैं, जो उन्होंने हाल ही में अपनी जमीन में लगाया है। उनके छोटे पोते परेश नायब तहसीलदार और उनकी पत्नी बेला ग्रेजुयेट थी। उनकी तीनों बहुयें सीधी–साधी महिलायें है। उन सब में उनकी पोती इन्दु प्रायमरी स्कूल पास की थी।

अथवा

उ) बेला एक बडे घर की लडकी है, अपने पिता की इकलौती बेटी है। कभी नाते–रिश्तेदारों में रही नहीं। वह अत्यधिक पढी–लिखी है। सबसे आदर पाती और राज करती आयी है। यहाँ वह केवल छोटी बहू है। यहाँ हर एक का आदर करना पडता है; हर एक से दबना पडता है; हर एक का आदेश मानना पडता है–यहाँ उसका वयक्तित्व दबकर रह गया है। इधर वह घरवालों से दुखी है, वह समझती है कि सब मेरा अपमान करती हैं, सब मेरी हँसी उडाती हैं। मेरा समय नष्ट करती हैं। मैं ऐसा महसूस करती हूँ, जैसे मैं परायों में आ गयी हूँ।

बेला आजादी चाहती है। दूसरों का हस्तक्षेप, दूसरों की आलोचना उसे पसंद नहीं। और वह अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती है। जहाँ वह स्वेच्छापूर्वक अपना जीवन बिता सके। वह चाहती है कि यदि बाग वाला मकान उसे मिल जाए तो वह सुख और शांति से रहे।

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: **1*4=4**

33. बहुमुखि प्रतिभा के धनी डा.राम्कुमार वर्मा आधुनिक हिन्दि साहित्य के महत्वपूर्ण कवि, नाटककार और इतिहासकार के रुप मे प्रसिद्ध है। चारुमित्रा, ऋतुराज, रेश्मि टाइ, दीपदान इनके प्रसिद्ध एकांकि है। श्रीधर किरातार्जुनीयम महाकाव्य के रचनाकार महाकवि भारवि के पिता और महापंडित है।श्रीधर की पत्नी का नाम सुशील है। वह अपने पुत्र को बहुत प्यार करती है। भारवि शास्त्रार्थों का पारंगत तो करता है, साथ ही सथ अहंकारी भी बन जाता है। परन्तु पिता श्रीधर चाहते हैं कि भारवि अहं को त्याग दे अन्यथा भारवि जीवन में उन्नति नहीं कर पायेगा। श्रीधर अन्य पंडितों के सम्मुख ही अपने बेटे की बर्त्सना करते हैं।

इससे अवमानित भरवि घर छोडकर चले जाते हैं। इससे माता सुशीला बहुत दुखित हो जाती है। पत्नी को बहुत समझाने के लिए कोशिश करते हैं। परंतु सुशीला समझती नहीं। तब अपनी पत्नी का दुख करने के लिए स्वयं ढूढकर लाने का वादा करते हैं

श्रीधर पत्नी से बात करते करते कहते हैं कि मैं बेटे को बहुत प्यार करता हूँ उससक अहंकार कम करने ऐसे अवमानित किया हूँ। इसको सुनते ही भारवि अपने पिताजी से प्रायश्चित माँगता है। तब वह क्षमा करने के बारे में कहा। भारवि नहीं मानते। तब श्रीधर बेटे के ऊपर प्यार रहने के कारण माता की सेवा करने के लिए कहता है फ़िर भी भारवि नहीं मानता है और कहता है कि मैं आत्महत्या करता हूँ। नहीं तो आप शास्त्रानुसार सजा दीजिए। तब अपने बेटे के ऊपर रखते हुए कहते हैं कि छ: मास तक श्वासुरालय में जाकर सेवा करना और जूठे भोजन पर अपना पोषण करना।

इससे सुशीला का मातृप्रेम का चित्रण मिलता है। बेटा अहंकारी हो कुछ भी हो माता होने के कारण बेटे को बहुत प्यार करने का चित्रण यहाँ मिलता है। श्रीधर का चरित्र एक अच्छे पिताजी और अच्छे पति के रूप में बिंबित होता है। उनका चरित्र चित्रण ऐसे मालुम होता है कि सन्मार्ग से विमुख बेटे को कैसे वापस लाना है और अपनी पत्नी को कैसे देखभाल करता है। उनके चरित्र ऐसे प्रतीत होता है कि नामी बेटे के पीछे पिताजी कैसे रहता है और बेटे को कैसे प्रसिद्ध करता है।

अथवा

महाकवि भरवि किरातार्जुनीयम का रचनाकार हैं। संस्कृत के महापंडित श्रीधर और सुशीला का पुत्र है। भारवि शास्त्रार्थों का पारंगग हैं। भारवि शास्त्रार्थों में अनेक पंडितों को परास्त तो करता है। साथ ही साथ अहंकारी भी बन जाता है। परन्तु उसके पिताजी बेटा अहंकरी बनना नहीं चाहते हैं। इसलिए पंडितों के सामने अवमानित करते हैं।

अवमानित भारवि घर छोडकर जाते हैं। और प्रतिशोध के अग में आकर पिताजी को ही समाप्त करना चाहते हैं। शाम के समय जब वह छुपके बैठकर रात में जब पिताजी सो जाते हैं तब उसका सिर काटने के बारे में सोचते हैं। जब वह माँ–पिता का वार्तालाप सुनते हैं उनको पता चलता है कि उसका पिताजी इसलिए अपमानित करते हैं कि उसका अहंकार को मिटाता हैं।

भारवि बहुत दुखित हो जाता है और पिताजी से अपना सिर छेदन करने के लिए बोलते हैं। जब पिताजी नहीं मानते हैं तब वह शास्त्रानुसार शिक्षा देने के लिए कहते हैं कि छ: मास तक श्वसुरालय में जाकर सेवा करना और जूठे भोजन पर अपना पोषण करना।

भारवि एक अच्छा बेटा है। महान कवि है। प्रसिद्ध शास्त्रार्थ है।

खण्ड –'घ'

V. अ. वाक्यशुद्ध कीजिए। 3*1=3

34. .१. उसे दिखावा नही रुचता है।

२. मन मे ऐसी शक्ती है।

३. ऐसा कभी नही हुआ था ।

आ. निम्नलिखित वाक्यों का सूचनानुसार बदलिए। 3*1=3

35. १. यात्री गंगा मे स्नान करेंगे।

२. उस रोगी का शरीर बहुत दुर्बल है।

३. इस दिशा मे काम शुरु हुआ था।

इ. अन्य लिंग रूप लिखिए। 3*1=3

36. १. i) अभिनेत्री ii) वर ३. आदमी

ई. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए: 3*1=3

37. १. i) सदैव

ii) कुरुप

iii) प्रशंसनीय

उ.निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कीजिए : **2*1=2**

38. १. प्र + दूषण २. अनु + शासन

ऊ. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलगकर लिखिए: **2*1=2**

39. १. स्वच्छा + ता २. कहानी + इयाँ

VI अ .निम्नलिखित अनुच्छेद पढकर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **1*4=4**

40

1. अमेरिकी
2. समाचार पत्र
3. लक्ष्मीपुरा
4. फ्रांसीसी

आ. 41. **1×4=4**

बिन्दु के आधार पर उत्तर।

इ. हिन्दी में अनुवाद कीजिए। **1*3=3**

42. 1. भाषा सरल रुप से समझने योग्य होना चाहिए ।

2. कटिण परिश्रम के बिना सफ़लता नहीं मिल सकती।

3. कल महीने का अंतिम दिन है।

******